International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232
Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 3; Issue 5; September 2017; Page No. 72-75

संस्काराणामाधुनिकयुगे महत्त्वम्

डॉ. प्रियंका द्विवेदी
शोध पत्र, अहमदाबाद, गुजरात, भारत।

प्रस्तावना

प्राचीन काल से ही ईश्वर धर्म, उपासना, यज्ञ एवं कर्मकाण्ड तथा पुनर्जन्म के प्रति मनुष्य की अटल आस्था रही है। मनुष्य जन्म को दुर्लभ माना गया है। अच्छे संस्कारो एवं शुभ कर्मो के परिणामस्वरुप ही मानव-जन्म की प्राप्ति होती है। इस प्रकार संस्कारों का मनुष्य जीवन के साथ सम्बन्ध गर्भावस्था से लेकर मृत्युपर्यन्त सदैव बना रहता है। अतः समय-समय पर जन्म एवं मृत्यु से सम्बन्धित नाना प्रकार की संस्कारिक प्रक्रियाएँ मानव-जीवन के साथ अपना सम्बध स्थापित कर समाज में प्रतिष्ठा को प्राप्त किये हुए हैं। इन संस्कारों का प्रभाव आज भी मानवीय जीवन में स्पष्ट परिलक्षित होता है।

'सम्' उपसर्ग से 'कृञ्' धातु को घञ् प्रत्यय और 'संपरिभ्यां करोतौ भूषणे' (पाणिनी 06/1/137) सूत्र से भूषण अर्थ मे 'सुट्' करने पर 'संस्कार' शब्द बनता है। अर्थात मण्डित, भूषित, अलंकृत करने के लिये अथवा सुन्दर, व्यवस्थित, गुणवान् एवं सुदृढ बनाने के लिये या सजाने और सँवारने के लिये अथवा दोषों को दूर करके गुणो का आधान करने के लिये किया जाने वाला कर्म, क्रिया, विधि, पद्धति या कार्य संस्कार कहलाता है। महर्षि जैमिनि प्रणीत 'द्रव्यगुणसंस्कारेषुबादरिः' (3/1/3) सूत्र के भाष्य में श्रीशबरपादमहाभागने संस्कार को परिभाषित करते हुये कहा है – 'संस्कारो नाम स भवति यस्मिञ्जाते पदार्थो भवति योग्यः कस्चिदर्थस्य' अर्थात् संस्कार वह होता है, जिसके उत्पन्न होने पर पदार्थ किसी प्रयोजन के लिये योग्य होता है। आचार्य चरक कहते है 'संस्कारो हि गुणान्तराधानमुच्यते' (चरकसंहिता, विमान- 1/27) अर्थात् दुर्गुणों, दोषो का परिहार तथा गुणों का परिवर्तन करके भिन्न एवं नये गुणों का आधान करने का नाम संस्कार है। तन्त्रवार्तिककार श्रीभट्टपाद के अनुसार संस्कार वे क्रियायें तथा रीतियाँ हैं, जो योग्यता प्रदान करती है – "योग्यतां चादधानाः क्रियाः संस्काराइत्युच्यन्ते।"

अर्थात् संस्कार वे क्रियायें तथा रीतियाँ हैं, जो योग्यता प्रदान करती हैं। वह योग्यता दो प्रकार की होती है – 1. पापमोचन से उत्पन्न योग्यता तथा 2. नवीन गुणों की प्राप्ति तथा तप एवं संस्कारो से पापों का मार्जन होता है।

वीरमित्रोदय में संस्कार की परिभाषा इस प्रकार की गयी है – यह एक विलक्षण योग्यता है, जो शस्त्रविहित क्रियाओं के करने से उत्पन्न होती है। वह योग्यता दो प्रकार की है – 1. जिसके द्वारा व्यक्ति अन्य क्रियाओं के योग्य हो जाता है। यथा – उपनयन–संस्कार से वेदारम्भ होता है तथा 2 – दोष से मुक्त हो जाता है। यथा – जातकर्म-संस्कार से वीर्य एवं गर्भाशिय का दोषमोचन होता है।

मनुष्य माताके गर्भसे शिशुके रुपमें जब जन्म लेता है, तब वह अपने साथ दो प्रकारके संस्कारोकों लेकर आता है। एक प्रकारके संस्कार वे हैं, जो वह जन्म – जन्मान्तरोंसे अपने साथ लेकर आता है और दुसरे प्रकारके संस्कार वे हैं, जिन्हें वह अपने माता-पितासे संस्कारोंके रुपमें वंशानुक्रमसे प्राप्त करता है। ये संस्कार अच्छे और बुरे – दोनों हो सकते हैं। वैदिक विचारधारामें मनुष्य – जन्मका उद्देश्य शुभ संस्कारों द्वारा अन्तः एवं बाह्य दोनों प्रकारके मैलोंको धोना है, उसे निखारते जाना है। पिछला मैल कैसे धोया जाय और नया रंग कैसे चढाया जाय यह सब कुछ इस जन्मके संस्कारोंद्वारा हो सकता है। इस जन्ममें शरीरके साथ सम्बद्ध होकर ही तो आत्मा पकड़ में आती है। जिस समय, जिस क्षण आत्मा शरीरके बन्धनको प्राप्त हुई, उसी समयसे, उसी क्षणसे वैदिक विचारधारा उस क्षणतक डालती रहती है, जबतक 'आत्मत्तत्व' शरीरको छोड़कर फिर तिरोहित नहीं हो जाता। यदि शुभ – संस्कारोंकी व्यवस्था नहीं होगी तो अशुभ – संस्कार तो स्वतः पड़ने की प्रतीक्षाभर कर रहे होते हैं। जैसे ही व्यक्ति शिथिल हुआ, वे अशुभ – संस्कार अपना प्रभाव और प्रताप दिखाने लगते हैं। अतः हमारे ऋषियों और मुनियोंद्वारा जीवनके बीजवपन और अंकुरणसे लेकर मृत्युपर्यन्त अर्थात् गर्भाधान – संस्कारसे अन्त्येष्टि – संस्कारतककी व्यवस्था सुनिश्चित की गयी है। मानव – धर्मशास्त्रके प्रवर्तक महर्षि मनु ने लिखा है –

> निषेकादिश्मशानान्तो मन्त्रैर्यस्योदितो विधिः।
> तस्य शास्त्रेऽधिकारोऽस्मिञ्ज्ञेयो नान्यस्य कस्यचित्।। (मनु. 2। 16)

मनुष्योंके शरीर और आत्माको उन्नत करनेके लिये मन्त्रोच्चारणपूर्वक यथाविधि निषेकसे लेकर श्मशान अर्थात् गर्भाधानसे लेकर अन्त्येष्टिपर्यन्त जिसके संस्कार होते है, वही शास्त्रका अधिकारी होता है। संस्कारों की संख्यामें विद्वानोंमें प्रारम्भसे ही कुछ मतभेद रहा है। गौतमस्मृतिमें 48 संस्कार बतलाये गये हैं। महर्षि अङ्गिराने 25 संस्कार निर्दिष्ट किये गये हैं। पुराणोमें भी विविध संस्कारोंका उल्लेख है, परंतु उनमें मुख्य तथा आवश्यक षोडश संस्कार माने गये हैं।

महर्षि व्यासद्वारा प्रतिपादित प्रमुख षोडश संस्कार इस प्रकार है –

गर्भाधानं पुंसवनं सीमन्तो जातकर्म च ।
नामक्रियानिष्क्रमणेऽन्नाशनं वपनक्रियाः ।।
कर्णवेधो व्रतादेशो वेदारम्भक्रियाविधिः।
केशान्तः स्नानमुद्वाहो विवाहाग्निपरिग्रहः ।।
त्रेताग्निसंग्रहश्चेति संस्काराः षोडश स्मृता । (व्यासस्मृति 1। 13-15)

अर्थात्- 1.गर्भाधान, 2.पुंसवन, 3.सीमन्तोन्नयन, 4.जातकर्म, 5.नामकरण,
6.निष्क्रमण 7. अन्नप्राशन, 8. वपन-क्रिया(चूडाकरण) 9. कर्णवेध 10. व्रतादेश (उपनयन) 11. वेदारम्भ, 12. केशान्त(गोदान) 13. वेदस्नान 14. विवाह,
15 .विवाहाग्नि – परिग्रह, 16. त्रेताग्निसंग्रह ।
धर्मशास्त्रीय ग्रन्थों में मानवीय जीवन से सम्बन्धित सोलह संस्कारों को मुख्य रुप से स्वीकार किया गया है तथा इन संस्कारों को मानव जीवन के शारीरिक, मानसिक एवं सद् चारित्रिक गुणों के विकास की दृष्टि से जीवन के अभिन्न अंग के रुप में स्वीकार किया गया है । संस्कार मनुष्य के जीवन से शारीरिक, पारिवारिक, बौद्धिक एवं आध्यात्मिक रुप से सम्बन्धित हैं क्योकि जीवन में संस्कारों के माध्यम से ही ऐहलौकिक स्वास्थ्य, सुख-शान्ति तथा दीर्घायु के साथ परलौकिक अभ्युदय की भी प्राप्ति होती है, अतः इन संस्कारों को विधिवत् सम्पन्न करना चाहिए । इस सम्बन्ध में य़ाज्ञवल्क्यस्मृति में वर्णित है कि गर्भाधान से लेकर अन्त्येष्टि पर्यन्त सभी संस्कारों को विधिवत् मन्त्रोचारण सहित पूर्ण करने का निर्देश दिया गया है ।

ब्रह्मक्षत्रियविट्शूद्रा वर्णास्त्वाधास्त्रयो द्विजाः ।
निषेकाद्याः श्मशानान्तास्तेषां वै मन्त्रतः क्रियाः । (याज्ञ. स्मृ., 1.10)

प्राचीन ऋषि-मुनियों द्वारा मानव की शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक तथा सामाजिक उन्नति के लिए संस्कारों की परिकल्पना की गई थी । मनुष्य का जीवन समय-समय पर विभन्न परिस्थितियों को सुचारु रुप से चलाने के लिए शिक्षा, सदाचार, शुद्धवातावरण, अनुकुल परिस्थिति और विवेक इत्यादि की आवश्यकता होती है । संस्कारों के माध्यम द्वारा न केवल मनुष्य का शरीर अपितु सूक्ष्म अन्तः करण पर भी स्वच्छ एवं अनुकूल प्रभाव पड़ता है । षोडश संस्कारों को करने पर मनुष्य सोलह बार अपने जीवन काल में संस्कारित होकर मानव शरीर को धारण किये हुए ही देवताओं के तुल्य यश एवं मान – सम्मान को प्राप्त कर लेता है । मानव एवं राष्ट्र को उन्नति की ओर अग्रसर करने के लिए संस्कारों का होना परम आवश्यक है । संस्कार ही उच्च गुण, कर्म की प्रेरणा देते हैं, इस से ही समाज एवं मनुष्य का विकास सम्भव होता है । व्यक्ति समाज का अंग है और समाज ही व्यक्ति की आकांक्षाओंको पूर्ण करता है । संस्कार ही समाज एवं व्यक्ति दोनों को एक- दूसरे के पूरक बनाने में सहायक होते हैं । यदि मनुष्य में संस्कारो का प्रादुर्भाव हो जाये, तो सम्भवतः उसको दुःखों से निवृत्ति मिलेगी । बालक के जन्म लेने और सम्पूर्ण जीवन व्यतीत करके मृत्यु तक पहुंचने पर भी उसको संस्कारित किया जाता है क्योकि नवजात शिशु के पूर्व जन्म के कर्मो को गर्भाधान संस्कार से लेकर उसके जन्म होने तक के संस्कारों द्वारा एक नये जन्म के लिए उसको शुद्ध किया जाता है । इसी प्रकार अन्त्येष्टि संस्कार के द्वारा मनुष्य के इस जन्म के कर्मो को यहीं शुद्ध करते हुए, उसकी आत्मा को मोक्ष के लिए अग्रसर किया जाता है । अतः संस्कार ही ऐसा माध्यम है, जो व्यक्ति की परिस्थिति को काल एवं जीवन के आधार पर अनुकूल बनाने में सक्षम है । प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में इन संस्कारों का होना, उसकी उन्नति एवं श्रेष्ठता का प्रतीक है । गर्भाधान संस्कार की आवश्यकता मनुष्य के जीवन में विशेष महत्व रखती है । इस संस्कार से पति-पत्नि के सम्बन्ध की पवित्रता और वांछित संयम के महत्व का प्रकटीकरण होता है। गर्भाधान संस्कार द्वारा मन्त्रोच्चारण के माध्यम से स्त्री-पुरुष की मानसिकता को सन्तानोत्पति हेतु तैयार करना है। इस संस्कार द्वारा पति-पत्नी के हृदय में शुभ विचारों एवं भावों को रखने का उपदेश दिया जाता है। सुयोग्य बुद्धिमान् और विवेकी सन्तान के लिए पति-पत्नी को इस संस्कार की परम आवश्यकता है। मनुस्मृति में वर्णित है कि गर्भाधान संस्कार द्वारा ही इस लोक में प्रत्येक मनुष्य का वेदों के मन्त्रों द्वारा शुद्धिकरण होता है।

वैदिकैः कर्मभिः पुण्यैर्निषेकादिर्द्विजन्मनाम्।
कार्यः शरीर संस्कारः पावनः प्रेत्य चेह च । । मनु०स्मृ०, 2/26.

अतः गर्भाधान संस्कार के माध्यम से जन्म से पूर्व ही शिशु के लिए शुद्धीकरण प्रारम्भ होता है।
गर्भाधान संस्कार को करने पर पत्नी की गर्भ धारण करने पर गर्भ से सम्बन्धित सभी पापों एवं दोषों का निवारण होता है।

गार्भैर्होमैर्जातकर्मचौडमौञ्जीनिबन्धनैः।
बैजिकं गार्भिकं चैनो द्विजानामपमृज्यते। वही, 2/27.

संस्कार चन्द्रिका मे गर्भाधान संस्कार की आवश्यकता को बताते हुए कहा है कि इस संस्कार द्वारा वधू के दोषों का निवारण होता है। यज्ञ में सभी देवताओं को गर्भ रक्षक के लिए प्रार्थना करते हुए वर्णित है कि सर्व दोषनिवारक, अग्नि, वायु, चन्द्र और सूर्य आप सम्पूर्ण दिव्यगुण युक्त पदार्थों द्वारा दोषों का नाश करने वाले हो और आप वधू के गर्भ की रक्षा करते हुए इसके दोषों को दूर करें।

ओं अग्निवायु चन्द्र सूर्याः प्रायश्चित्तयो त्वं देवानां,
प्रायश्चित्तयः स्थ ब्राह्मणीं वो नाथकाम उपधावामि,
यास्या आपसव्या तनूस्तामस्या अपजहि स्वाहा इदमग्निवायु चन्द्र सूर्येभ्यः इदन्नमम्।। सं० चं०, पृ० 141.

सीमन्तोन्नयन संस्कार की आवश्यकता गर्भ के आठवें मास में गर्भ की सुरक्षा के लिए हैं। इस संस्कार के माध्यम से वीर और दीर्घायु सन्तान उत्पन्न होती है। इसमें बच्चे का हृदय एवं माता का हृदय मिलकर कार्य करते हैं। अतः माता एवं शिशु की सुरक्षा हेतु इस संस्कार की

आवश्यकता अनिवार्य है। अथर्ववेद के अनुसार वधू को यह आशीर्वाद दिया जाता है कि गर्भ केआठवें मास में इस संस्कार से गर्भ की रक्षा हो और वीर एवं पराक्रमी पुत्र की उत्पत्ति हो।

धाता दधातु दाशुषे प्राचीं जीवातुमक्षिताम् ।
वयं देवस्य धीमहि सुमतिं विश्वराधसः । अर्थ० वे०, 7/17/2. °

शिशु के जन्म के पश्चात् उसका नाम रखने के लिए माता-पिता द्वारा नामकरण संस्कार करवाया जाता है। नामकरण करना अत्यावश्यक है क्योंकि प्रत्येक मनुष्य अपने सम्पूर्ण जीवन में नाम से ही जाना जाता है। अतः बच्चे का उचित समय पर एवं शास्त्रीय विधि विधानानुसार नामकरण करना अत्यावश्यक है। यह नामकरण संस्कार परिवार एवं आचार्य इत्यादि द्वारा मिलकर सम्पन्न किया जाना चाहिए।’
नाम चास्मै दधुः...
आश्व० गृ० सू०, 1/15.
बच्चेका नाम ऐसा रखा जाए जो उसी की प्रतिष्ठा को बढ़ाने वाला और तेज उत्पन्न करने वाला हो।

युग्मानि त्वेव पुसाम्....
अर्थ० वे०, 1/15/4-10.

नवीन जन्मे बालक को गृह अथवा घर की अन्य चार दीवारी का परित्याग कर बाह्य शुद्ध वातावरण में ले जाना भी स्वास्थ्य के लिए लाभदायक है, इसलिए निष्क्रमण संस्कार सम्पन्न किया जाता है। इस दृष्टि से कि गृह की अपेक्षा शुद्ध वायुमण्डल में ले जाना शिशु के स्वास्थ के लिए अच्छा है। गोभिलगृह्यसूत्र में शिशु को चन्द्र दर्शन कराने का निर्देश दिया गया है।’

जननाघस्तृतीयोज्यौत्स्नस्तस्य तृतीयायाम् ।
प्रातः सशिरस्कं कुमारमाप्लाव्या स्तमिते वीते लोहितिम्न्यञ्जलिकृ।ः पितोपतिष्ठते।। गो०गृ०सू०,2 /8/1.

पारस्कर गृह्यसूत्र में बालक को वायुमण्डल का दर्शन करवाते हुए सूर्य देव का दर्शन कराने के लिए कहा गया है। इस प्रकार निष्क्रमण संस्कार की आवश्यकता शिशु को स्वस्थ रखने हेतु प्रातः सूर्यदर्शन एवं सांय काल के पश्चात् चन्द्र-दर्शन से सम्बन्धित कर धर्मशास्त्रीय ग्रन्थों ने यह सिद्ध किया है कि बच्चे के शारीरिक स्वास्थ्य के लिए शुद्ध वायु एवं धूप अनिवार्य है। जिसके लिए उसे घर से बाहर ले जाना अनिवार्य है। अतः निष्क्रमण संस्कार की आवश्यकता स्वतः सिद्ध हो जाती है ।
शिशु के यथोचित विकास के लिए यह अनिवार्य है कि उसे माता के दूध की साथ-साथ अन्न भी खिलाया जाए। इसके द्वारा शिशु शारीरिक स्वतन्त्रता ग्रहण करता है यद्यपि दूध में सभी पौष्टिक-तत्व विद्यमान होते हैं लेकिन दूध पर सदैव निर्भर नहीं रहा जा सकता, इसलिए शिशु का अन्नप्राशन संस्कार सम्पन्न किया जाता है। अन्न से शिशु के प्राण, अपान, नेत्र, श्रोत्र आदि सभी अंग पुष्ट बनते हैं। पारस्कर गृह्यसूत्र में इस संस्कार की आवश्यकता को स्पष्ट करते हुए कहा गया है कि मन्त्रोच्चारण सहित बच्चे का यह संस्कार सम्पन्न करना चाहिए।
बालक की तेजस्विता वृद्धि हेतु यह संस्कार आवश्यक है। इस अवसर पर घृतयुक्त अन्न या भात के साथ दही, शहद अथवा तीनों को मिश्रित कर बच्चे को अन्न दिये जाने का निर्देश धर्मशास्त्रीय ग्रन्थों में प्राप्त होता है।

षष्ठे मास्यन्नप्राशनम जमन्नाद्य कामस्तेत्तिरं ब्रह्मवर्चसकामो घृतौदनं तेजस्कामो... दधि मधु घृत मिश्रितमन्नं प्राशयेत्।
(वीर० मि० उ०, पृ० 276)

बच्चे को दीर्घायु, सौन्दर्य एवं कल्याण प्रदान करने की दृष्टि से चूड़ाकर्म संस्कार की अनिवार्यता को भी नकारा नहीं जा सकता। इस सम्बन्ध में आचार्य सुश्रुत का कथन द्रष्टव्य है। आचार्य सुश्रुत का मानना है कि केश कर्तन शोभादायक एवं उत्साहवर्धक है केश, नख आदि के शुद्ध होने पर चित्त प्रसन्न होता है, स्फूर्ति मिलती है एवं पापों का शमन होता है। - (सु० श०, 24/72)
विद्या प्राप्ति के लिए बच्चे का उपनयन संस्कार किया जाता है जो बच्चे के विकास एवं चरित्र निर्माण से सम्बन्ध रखता है, जिसके निमित्त उसे गुरुकुल में गुरु के पास ले जाया जाता है। ज्ञान गुरुकुल में जाने से ही मिलता है और गुरुकुल में प्रवेश इस संस्कार के पश्चात् ही होता है। इस संस्कार के द्वारा बालक आचार्य के समीप रहता हुआ वेदों की सम्पूर्ण शिक्षा के साथ-साथ जीवनोपयोगी बहुमूल्य नैतिक मूल्यों को भी करता है। - (पा० गृ० सू०, 2/4/3-4.)
उपनयन संस्कार इसलिए आवश्यक है कि बालक गुरुकुल में शिक्षा प्राप्त करे। समावर्तन संस्कार की आवश्यकता इसलिए है कि इस प्रकार गुरुकुल में शिक्षा एवं वेदाध्ययन के उपरान्त ही शिष्य गृह की ओर प्रशस्त हो।

वेद समाप्य स्नायात्।
ब्रह्मचर्य वाऽष्टाचत्वारिंर्देशकम्। वही, 2/6/1-2.

अथर्ववेद में वर्णित है कि वेदाध्ययन सम्पूर्ण करके गृहस्थ की ओर परिवर्तित होते हुए स्नानादि क्रियाओं को पूर्ण करके शुभ गुणों एवं कर्मों को धारण करते हुए समावर्तन संस्कार पूर्ण करना आवश्यक है । समाज में गृहस्थाश्रम को सर्वोपरि स्थान प्राप्त है और गृहस्थाश्रम का आधार है विवाह संस्कार । समाजमें एक अत्यन्त दायित्वपूर्ण अधिकार वर-वधूको विवाह संस्कारके माध्यम से दिया जाता है । जिस प्रकार भगवान् विष्णु समस्त जीवोंका पोषण करते तथा उन्हें धारण करते हैं, उसी प्रकार विवाह के द्वारा वर-कन्या वैवाहिक यज्ञके माध्यमसे परिणयसूत्रमें बँधकर अपने परिवार के प्रत्येक व्यक्तिका उपयुक्त ढंगसे पालन, पोषण एवं संवर्धन करना स्वीकार करते हैं एवं स्त्रीधाराको पुरुषधारामें मिलाकर स्त्रीको मुक्तिकी अधिकारिणी बनाना तथा दोनोंकी अनियंत्रित पशुवृत्तियोंको नियन्त्रित कर दोनोंकी शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, इहलौकिक, पारलौकिक तथा आध्यात्मिक उन्नति एवं दोनोंकी पूर्णता सिद्धकर सांसारिक सुख-शान्ति प्रदान करना विवाह संस्कार का प्रमुख उद्देश्य है ।
यह मानवका अन्तिम संस्कार है । मृत व्यक्तिकी दाहक्रियासे लेकर

तेरहवें दिनतककी समस्त क्रियाएँ इसी संस्कारके अन्तर्गत आती हैं। प्रारम्भिक संस्कार जहाँ ऐहिक जीवनको पवित्र और सुखी बनानेके निमित्त किये जाते हैं, वहाँ यह अन्तिम संस्कार परलोकसुधार के लिये किया जाता है।

आजके व्यस्त जीवन एवं वैज्ञानिक सोचने अनेक संस्कारोंको पूर्णतः भुला दिया है। यह महान् भयकी सूचना है। नामकरण, विवाह एवं अन्त्येष्टि-जैसे कुछ संस्कार आज भी पूरी श्रद्धा तथा सामर्थ्यके अनुसार मनाये जाते हैं। संस्कारोंके आयोजनोंका एक निश्चित विधि-विधान हैं, उसे जाननेके लिये जिज्ञासुओंको गृह्यसूत्रों, धर्मसूत्रों तथा मन्वादि स्मृतियोंका अवलोकन करना चाहिये।

संस्कारों को मानव जीवन के शारीरिक, मानसिक बौद्धिक विकास एवं सद् चरित्रिक गुणों के विकास की दृष्टि से जीवन के अभिन्न अंग के रुप में स्वीकार किया गया है। संस्कार मनुष्य के जीवन से शारीरिक, पारिवारिक, बौद्धिक एवं आध्यात्मिक रुप से सम्बन्धित है क्योंकि जीवन में संस्कारो के माध्यम से ही ऐहलौकिक स्वास्थ्य, सुख-शान्ति तथा दीर्घायु के साथ परलौकिक अभ्युदय की भी प्राप्ति होती है, अतः इन संस्कारों को विधिवत् सम्पन्न करना चाहिए।

सत्यं शिवं सुन्दरम् में मनोयोग ही सृष्टि का प्रयोजन है और इस परम प्राप्ति का एकमेव कारण संस्कार है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. पाणिनी 06/1/137
2. चरकसंहिता, विमान- 1/27
3. मनु. 2 ।16
4. व्यासस्मृति 1 ।13-15
5. याज्ञ. स्मृ.,1.10
6. मनु०स्मृ०, 2/26, 27
7. संस्कार चन्द्रिका पृ० 141.
8. अर्थ० वे०, 7/17/2.
9. आश्व० गृ० सू०, 1/15.
10. अर्थ० वे०, 1/15/4-10.
11. गोभिलगृह्यसूत्र 2 /8/1.
12. पारस्कर गृह्यसूत्र 2/4/3-4.
13. पारस्कर गृह्यसूत्र 2/6/1-2.